Naidunia (Indore), 09th April 2026, Naidunia City, Page - I

आइआइटी ने जलवायु निगरानी एप किया विकसित

सूखे और बाढ़ से पहले मिलेगी चेतावनी

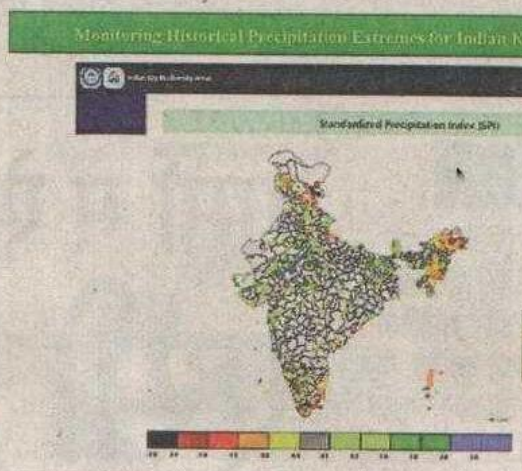

आइआइटी इंदौर के एप पर नजर आती जानकारी। ● सौजन्य

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौरः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी इंदौर) के विज्ञानियों ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम कदम उठाया है। संस्थान के शोधकर्ताओं ने भारत के प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए एक खास जलवायु निगरानी एप्लिकेशन विकसित किया है। यह एप्लिकेशन जैव विविधता क्षेत्रों में उन जगहों की पहचान करेगा, जहां सूखा या अत्यधिक बारिश जैसी स्थितियां ज्यादा देखने को मिलती हैं। इससे वैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं को सही समय पर सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

प्रो. मनीष कुमार गोयल के मार्गदर्शन में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विजय जैन व अन्य शोधकर्ताओं ने एप्लिकेशन विकसित की है। प्रो. गोयल के मुताबिक भारत में 600 से अधिक प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र हैं, जो अलग-अलग जलवायु और पारिस्थितिक तंत्रों में फैले हुए हैं। इनमें से कई क्षेत्र दुनिया के महत्वपूर्ण जैव विविधता हाटस्पाट में शामिल हैं।

उदाहरण के तौर पर पश्चिमी घाट और हिमालय जैसे क्षेत्र बेहद संवेदनशील हैं। पश्चिमी घाट में बढ़ती आबादी के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है, वहीं हिमालय में तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जिससे वहां की जैव विविधता खतरे में है।

दुर्लभ प्रजातियों की वनस्पति को बचाएंगे : प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र वे स्थान होते हैं, जो पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। यहां कई दुर्लभ और अनोखी प्रजातियां पाई जाती हैं, जो दुनिया में कहीं और नहीं मिलतीं। इन क्षेत्रों की पहचान कुछ खास मानदंडों के आधार पर की जाती है, जैसे संकटग्रस्त प्रजातियां, सीमित क्षेत्र में मिलने वाली जीव-जंतु, प्राकृतिक स्थिति की शुद्धता, महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रियाएं और उस क्षेत्र का वैश्विक महत्व।

72 साल का डेटा का करेंगे आकलन

बदले जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली चुनौती से निपटने के लिए यह एप्लिकेशन बनाया है। 1951 से 2022 तक यानी 72 साल के डेटा का विश्लेषण कर किया जाएगा। इसके माध्यम से सूखा और वर्षा के पैटर्न को समझा जाएगा। यह जिला स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराएगा। आइआइटी के निदेशक सुहास जोशी के मुताबिक यह तकनीक वैज्ञानिक शोध और व्यावहारिक उपयोग का बेहतरीन उदाहरण है।

बदला जलवायु भी खतरा : वर्तमान में जलवायु परिवर्तन इन क्षेत्रों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। तापमान और वर्षा के बदलते पैटर्न से पौधों और जानवरों का जीवन प्रभावित हो रहा है। अत्यधिक बारिश से बाढ़ का खतरा बढ़ता है, जिससे जंगल, आर्द्रभूमि और घास के मैदानों को नुकसान पहुंचता है। वहीं सूखे की स्थिति में पानी की कमी से कई प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है।